नकछेद भाई

(अवधी कहानियाँ)

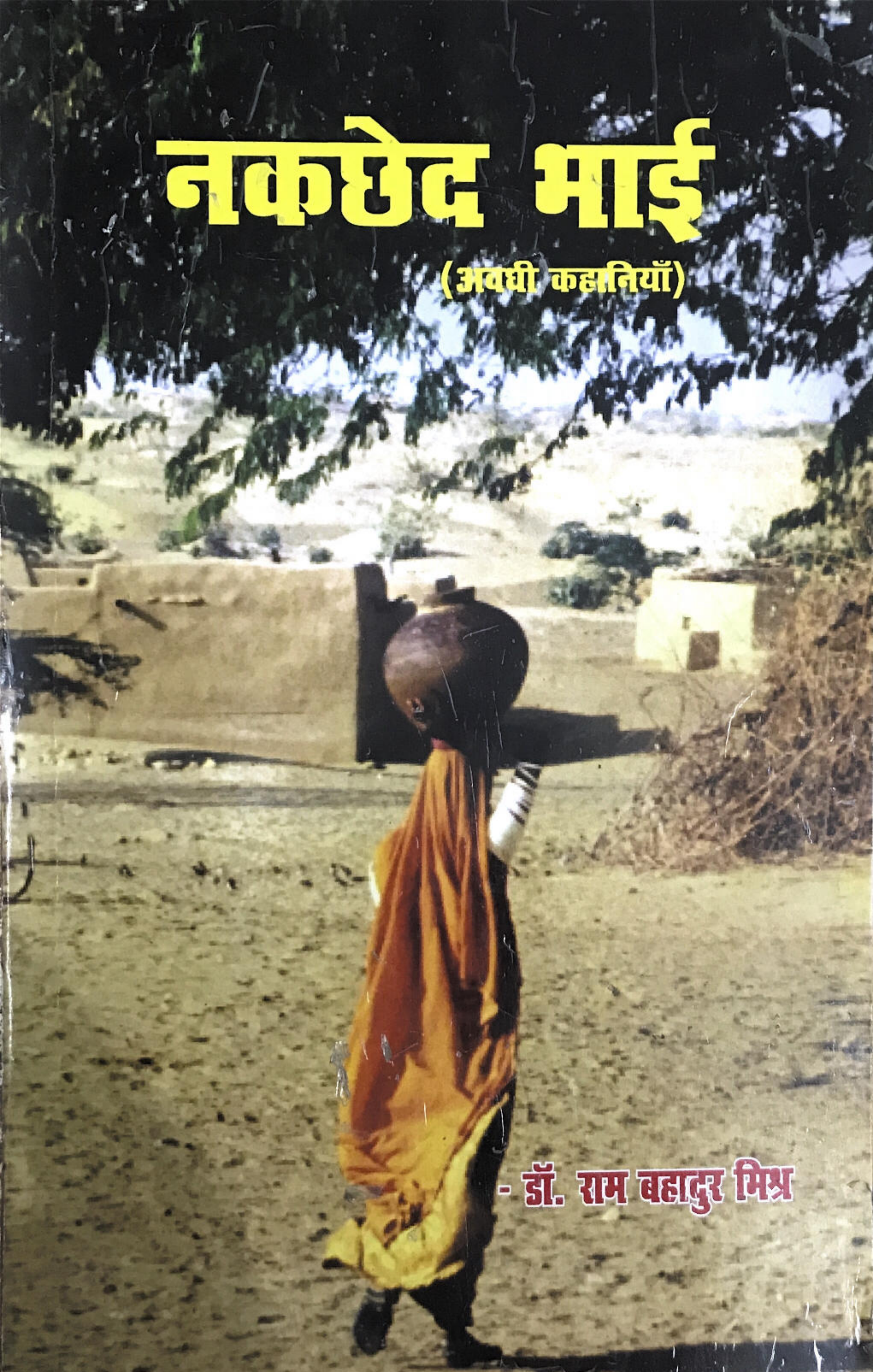

- डॉ. राम बहादुर मिश्र

नकछेद भाई

(अवधी कहानियाँ)

डॉ. राम बहादुर मिश्र

डॉ. रामबहादुर मिश्र

जन्म : 12 सितम्बर 1955 जमुवारी शुकुल बाजार सुलतानपुर (उ.प्र.) भारत।

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), पी-एच.डी. (लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ) - 1987

विषय : अवधी का फाग साहित्य-एक अध्ययन

प्रकाशित कृतियाँ :

1. अवधी लोकोक्तियाँ (1992),
2. अवधी लोक धारा (1998),
3. कुछ अनुभूतियाँ कुछ विचार (1998),
4. अवध मा होली खेलैं रघुवीरा (1999), (एक हजार अवधी फाग गीत),
5. लागे मसवा असाढ़ (बारहमासा साहित्य- 2003 उ.प्र. हिंदी संस्थान से पं. राम नरेश त्रिपाठी पुरस्कार),
6. यक रहें राजा (अवधी निबंध) 2004 उ.प्र. हिंदी संस्थान से पुरस्कृत जायसी पुरस्कार,
7. अवधी के प्रतिनिधि मुहावरे 2005 उ.प्र. हिंदी संस्थान से पुरस्कृत पं. राम नरेश त्रिपाठी पुरस्कार,
8. नेपाली अवधी साहित्यकार - 2010

सम्पादन :

1. नखत-1 (अवधी के प्रतिनिधि ग्याहर कवि) 1992
2. नखत-2 (अवधी के समकालीन प्रतिनिधि कवि) 2002
3. नखत-3 (अवधी के समकालीन प्रतिनिधि कवि) 2009
4. ये माटी अवध रानी है (अवधी शोध ग्रंथ) 2005
5. अवधी त्रिधारा (अवधी नवगीत) 2007
6. जोंधइया (अवधी त्रैमासिकी) 1994
7. अवध-ज्योति (अवध त्रैमासिकी आरएनआई 62763/94) 1994 से अद्यावधि

विशिष्ट उपलब्धियाँ-

1. फेलोशिप उ.प्र. संस्कृति निदेशालय- 1998
2. डॉ. राम बहादुर मिश्र की अवधी लोक साहित्य साधना पर एम.फिल. लखनऊ विश्वविद्यलय 2003
3. डॉ. रामबहादुर मिश्र की अवधी साहित्य साधना विषय पर छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर से लघु शोध- 2005

सम्मान : जायसी पंचशती सम्मान (अवधी अकादमी) दिव्या समिति सुलतानपुर, भारतीय हिंदी परिषद, राष्ट्रीय रामायण मेला प्रयाग, विश्व अवधी संस्थान, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नैमिष तुलसी पीठ सीतापुर, वंशीधर शुक्ल स्मारक समिति खीरी, साहित्यकार समिति बाराबंकी, विश्वकर्मा साहित्य संस्थान बाराबंकी, भारतीय वांगमय पीठ कलकत्ता, अवधी संस्कृति प्रतिष्ठान नेपाल आदि संस्थानों द्वारा सम्मानित।

समरपन

अवध औ अवधी संस्कृति

मा रचे बसे सिरजनहार

महान कथाकार

भइया-सिउमूरत

का

अवधी किस्सा गोई की कड़ी म नकछेद भाई

रामबहादुर मिसिर

भाषा कै आदि रूप लोक भाषा आय। लोक साहित्य मां किस्सागोई - कथा किहानी सबसे जादा लोकप्रिय विधा होय। इनमा इतिहास, पुराण, धरम-करम, अध्यात्म औ तत्कालीन समाज कै संस्कृति समाई रहत है। कथा-किहानी म कल्पना के सहारे ग्यान-विग्यान की तमाम बातें पिरोई जात हैं। इनमा मनोरंजनै नहीं होत ज्ञान-रंजनौ होत है। इतिहास गवाह है कि तमाम महापुरुष कथा-किहानी पढ़ि-पढ़ि बड़े-बड़े पुरुषारथ किहिन। बड़े-बड़े किला फतेह कइ डारिन, बड़े-बड़े सूर बीरन का भुइयां कै धूरि चटाइन। छत्रपति शिवाजी कै उदाहरण देब काफी है।

लोक भाषा अवधी म किस्सागोई कै बड़ी पुरान परम्परा है, इनका लोककथा कहा जात है। लोककथा म कल्पना तत्व सबसे जादा रहत है। इहके साथै कौतूहल, हंसी-मजाक, सदाचार, राज-काज औ लोकजीवन की तमामन झांकी देखै क मिलत है। लोक कथा के समानान्तर किहानी लिखै कै परम्परा हर लोक भाषा म है। हिंदी कै सबसे खास लोकभाषा अवधी मा ई परम्परा खड़ी बोली के साथेन चली, यह अलग बात है कि इहमा लिखइया कथाकारन कै कमी रही।

आधुनिक अवधी मा किहानी कै परम्परा मोहिनी चमारिन की ‘छोट क चोर' से मानी जाय सकत है जौन 1915 मा कन्या मनोरंजन म छपी रहै। वहिके बाद बंशीधर शुक्ल, रमई काका और फिर उनके बाद डॉ. विद्याबिंदु सिंह, जय सिंह, 'व्यथित, सत्यधर, कृष्णमणि चतुर्वेदी 'मैत्रेय' डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल, आचार्य सूर्य प्रसाद शर्मा निशिहर, डॉ. विनय दास, डॉ. ज्ञानवती दीक्षित, डॉ. रश्मि 'शील' प्रदीप तिवारी जइसन तमामन अवधी कथाकार अवधी किहानी कै भंडार भरिन। इनमा से आधा दर्जन कहानीकारन के कहानी संकलन छपे। अवधी के ई कथाकार खड़ी बोली के कथाकारन से टक्कर लेत देखाय परे। ई कहानिन म शुष्कता, परपंच प्रदर्शन औ अनावश्यक विद्वत्ता कै चमत्कार नहीं। इनमा आपन भोगा लेखा जोखा है, उधार कै अनुभूति नाही है। किहानी कै सबसे बड़ा गुण है, वहिमा कथा रस सुरू से आखिर तक विद्यमान रहत है। जहाँ तक ई कहानिन मा शिल्प विधान कै बात है तौ इनमा नये मुहावरा औ कहानी कहै कै तरीका परम्परा क जोड़त भये आधुनिकता से कदम मिलाय के चलत है। नकछेद

भाई कहानी संग्रह यही कड़ी मा आपन हाजिरी जनाय रही है।

संग्रह मा आठ किहानी है - ***बाबाजी, रमेसर, रानी, नकछेद भाई, डफाली चच्चा, जफड़ी, पलई काका, औ मन कै मइल।*** सगरी की सगरी कहानी गांव की भाव भूमि पर आधारित है। किहानी 'बाबा जी' मा सरवरिया बभनन के अहं कै टकराव है। ई किहानी मा कौआ कान लैगा वाला मुहावरा चरितार्थ होत है। नामसमझी और गलतफहमी मा पूरा गांव दुइ गुट म बंटि जात है औ आपसी बैमनस बाढ़ि जात है जौन बीस साल तक जिंदा रहत है। 'रमेसर' कहानी गांव के बिगड़े रईस के परिवार कै किहानी आय जिहमा अकर्मण्यता कै दंश झेलत है अगली पीढ़ी। 'रानी' और 'नकछेद भाई' दुइनौ किहानी म समाज के अक्षम (विकलांग) चरित्र क देखावा ग है। रानी औ नकछेद दुइनौ जन्मजात अपंग रहें मुला उद्दिम के बल पर आपन मान-सम्मान तौ बढ़ौबै भयें आर्थिक रूप से मजबूत बनाइन अपना का। रानी तौ पूरे गांव की मिहरियन कै माली हालत सुधार दिहिस। 'डफाली चच्चा' कै नायक एक लोक कलाकार के साथ वह दलित चरित्र आय जे पूरे गांव म मान सम्मान पावत है। जिंदगी भर कुंवार रहे मुला उनकै चरित्र बेदाग रहा। गांव वालेन खातिर उइ सबसे बड़े परमार्थी रहें।

जफड़ी कहानी म गांव के उठागीरन कै किहानी है। इनके सब पात्र अकर्मण्य, दिशाहीन, अल्पशिक्षित औ कुसंस्कारी हैं। कोऊ दारू पिये दुंदुवात है, कोऊ जुवा खेलत है तो कोऊ दलाली-मक्कारी करत है। ई किहानी के सब पात्र पक्के हरामखोर हैं।

पलई काका वफादारी कै मिसाल हैं। उनकी नजर म करम पूजा है। मन कै मइल मा नई औ पुरानी पीढ़ी कै वियोग औ संजोग कै कथा कहत है। नकछेद भाई संग्रह की सारी किहानी गांव की संस्कृति रहनी-सहनी औ हुवाँ के लोक जीवन क उरेहत हैं। सारी किहानिन म पूरा गांव जीवन्त है। लोकगाथा, लोकगीत, मुहावरा औ कहावत के माध्यम से गांव के चरित्र का उजागर कीन गवा है। आधुनिकता बोध के नाम पर कौनौ नवा प्रयोग नहीं कीन गवा। गांवन कै जीवन चकाचौंध से दूर है मुला टेलीविजन औ मोबाइल वहिका संचार क्रांति से जोड़ि दिहिन हैं। ई संचार क्रांति कै फायदा तौ जरूर मिला। पूरी दुनिया मूठी म आय गै मुला नवधा पीढ़ी मा उठाईगीरी, लुच्चई, स्वारथपरता, परसंताप, हेकड़ी यक दुसरे कै अनभल सोचब जइसन तमाम आय गई हैं। ई किहानी हमरे पचास साल कै आप बीती तौ बतउतै इनमा रेखाचित्र औ संस्मरण के तत्व खुद जादा हाबी हैं। किहानी अच्छी है

या खराब इहका सुधी पाठक बतइहैं हम तौ जस अवगता तस भाखि दीन।

सबका राम जोहारि

विषयानुक्रम

जफड़ी	11
बाबा जी	47
रमेसर	56
रानी	61
नकछेद भाई	65
मन कै मइल	69
पलई काका	74